ISSN : 0972-2351

सी एम एफ आर आइ विशेष प्रकाशन, संख्या 73

मत्स्यगंधा

2001

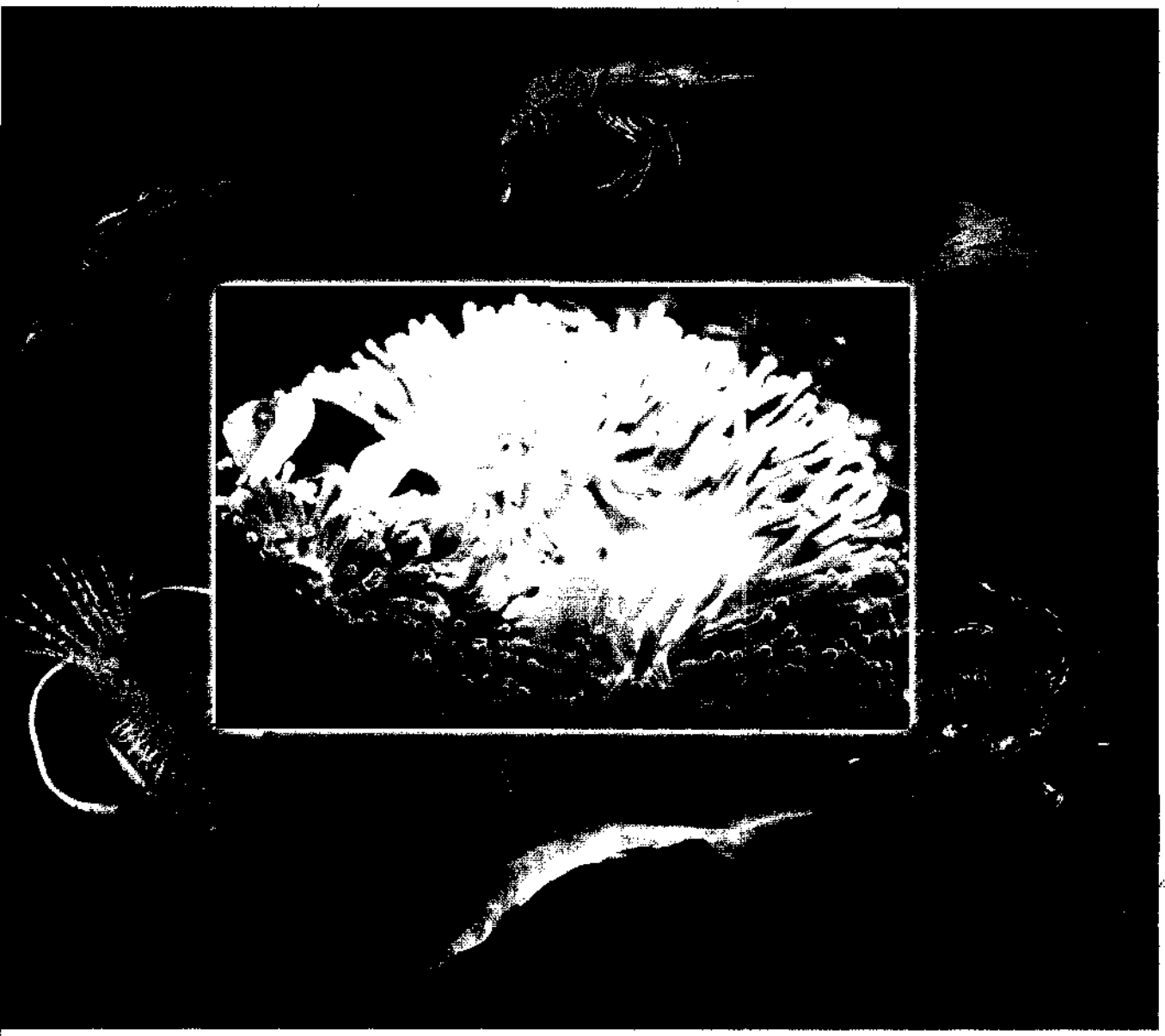

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
डाक संख्या 1603, टाटापुरम डाक, कोचीन 682 014, भारत
सितंबर 2002

रीफ जंगल का शेर : भारतीय लायन फिश

राहुल कृष्ण पान्डेय, के.पी. सैयद कोया
केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, मिनीकोय अनुसंधान केन्द्र, लक्षद्वीप

भारतीय लायन फिश या सिल्वर टर्की फिश, टेरिस वोलीटन्स जो कि अत्यन्त सुन्दर परन्तु प्रवाल मछलियों में सबसे खतरनाक मछली है। इसके पख देखने में पक्षी के पर के समान है, नुकीली सूई के समान होते है। इसके पख जबकि खतरनाक होने के साथ-साथ आकर्षक होते है और वास्तव में शक्तिशाली विष पैदा करते है। एक लायन फिश प्रायः अपने पखों का प्रयोग दूसरी मछली पर आक्रमण करने के लिये करती है। यहाँ तक कि यह विषैला पख इतना खतरनाक है कि यदि पनडुब्बे दुर्भाग्यवश परवाह किये बिना इसके काफी पास आ जाते तो कभी मृत्यु तक के खतरे का सामना करना पड़ सकता है। वास्तव में विष इसका हथियार होता है जिसका प्रयोग यह दो रूपों में करती है, अर्थात अपनी रक्षा तथा दूसरों पर आक्रमण करने के लिये लायन फिश लाल रंजित या धूसर कत्थई रंग की होती है। इसके शरीर पर बहुत सी पतली गाढ़ी धारियाँ होती है। सिर बड़ा व नुकीला और पृष्ठीय पख कंटक, श्यामल वलय-आकार निशान लिये होते है। यह उपतटीय जल में, चट्टानी तलों पर, प्रवालो के चारों तरफ और जेट्टी के खम्भों के पास 60 मीटर गहराई तक पायी जाती है। इसका वितरण अफ्रीका के सम्पूर्ण पूर्वी समुद्री भाग, गल्फ़ की खाड़ी, लक्षद्वीप, मालद्वीप, मलेशिया, इन्डोनेशिया, फिलीपीन्स, जापान, चीन तथा आस्ट्रेलिया में है। भारतीय लायन फिश स्कोरपेनिडे कुटुम्ब के अन्तर्गत आती है। इस कुटुम्ब में कुल 375 जातियाँ है जिनमें से 82 पश्चिमी भारतीय समुद्री क्षेत्र में पायी जाती है। ये अत्यन्त व्यावसायिक उपयोगिता नहीं रखती है। परन्तु कुछ मछलियाँ जैसे भारतीय लायन फिश सजावटी मछलियों की तरह अत्यन्त सुन्दर व कीमती होते हुये अपनी विशेष उपयोगिता व स्थान रखती है। स्कोरपियन मछलीयों में धारदार विषैला कंटक पाये जाते हैं जो कि भारतीय लायन फिश के मामले में ये बहुत सुदृढ है। भारतीय लायन फिश में अपने रंग को परिवर्तित करने की क्षमता होती है जो कि इसकी वृद्धि, मौसम में परिवर्तन और कभी-कभी इसके आवास परिवर्तन के कारण होता है। ऐसा जाना गया है कि इसके शरीर पर पाये जाने वाली पट्टियाँ

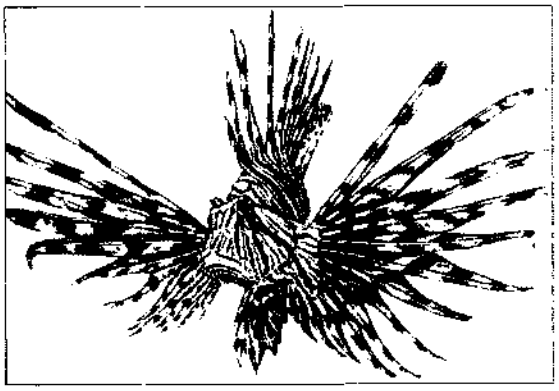

भारतीय लायन फिश

और बिन्दु आक्रमणकारी को भ्रमित व सावधान करने में अपना योगदान दे सकती है जिस से कि ये किसी शिकारी को शिकार होने से बचने के लिये अतिशीघ्र प्रवालों में मिलने में सहायता करती है। यह जानना भी अति आवश्यक है कि भारतीय लायन फिश जब अपने 'पखों' को किसी खतरे के संकेत के रूप में फैलाती है तब इसका यह किसी शारीरिक या मानसिक विक्षोभ का प्रदर्श होता है जो कि दूसरी मछलियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव छोड़ता है। इस कथन का आशय यह है कि मछली के रंग, निशान और अन्य लक्षण इसकी ही जाति और दूसरी जाति की मछलियों के लिये विशेष संकेत होते है। ये संकेत एक मछली द्वारा दूसरी

मछली के प्रणय निमंत्रण का द्योतक है दूसरे शब्दों में यह आनंन्दोत्सव की इच्छा जाहिर करती है। इसके साथ-साथ ये संकेत यह भी प्रदर्शित व सूचित करते है कि यह उनका अधिकार क्षेत्र है या वह विशेष क्षेत्र पहले से ही उनके द्वारा अधिग्रहित कर लिया गया है। साधारणतयः लायन फिश रीफ क्षेत्रों में जोड़े में तैरती हुई मिलती है। लक्षद्वीप में इसका प्रयोग केवल सजावटी मछली के रूप में पर्यटकों को आकर्षित करने के लिये होता है। इस बात को ध्यान में रखना अति-आवश्यक है कि यह यहाँ पर बहुतायत में नहीं पाई जाती है। यह अत्यन्त दुर्लभ मछली है। इसलिये पर्यावरणीय संपदा प्रबन्धन के दृष्टिकोण से यह नितान्त आवश्यक है कि रीफ क्षेत्रों को संतुलित रखा जाये, लैगून का तलमार्जन करने से बचा जाये और प्रवालों के पायन पर रोध लगायी जाये। ●

समुद्र तट के ये तीर्थ स्थान

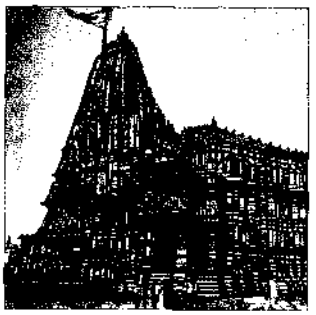

सोमनाथः सोमनाथ भारत का प्रसिद्ध और प्राचीन मंदिर है। यह समुद्र तट पर बना है। गुजरात राज्य के कठियावाड क्षेत्र के वेरावल स्टेशन से सोमनाथ मंदिर साढे चार किलोमीटर दूर है। इस मंदिर के बारे में प्रसिद्ध है कि इस मंदिर में सोना, हीरे जवाहरत का बडा भंडार था। इस में नीलम के 56 खंभे थे।

इतिहास से पता चलता है कि सोमनाथ का प्राचीन मंदिर ईसा पूर्व छठवीं सदी में ही निर्मित था। इसके बाद के वर्षों में देशी और विदेशी राजाओं ने इसे तोडा, लूटा और पुनर्निर्माण भी किया। स्वतंत्रा प्राप्ति के बाद भारत के पहले गृह मंत्री वल्लभ भाई पटेलजी की कोशिशों से आज के मंदिर का निर्माण पूरा हुआ। अपने नए रूप में सोमनाथ का मंदिर अपनी उसी पुरानी गरिमा के साथ मस्तक उठाए खडा है।

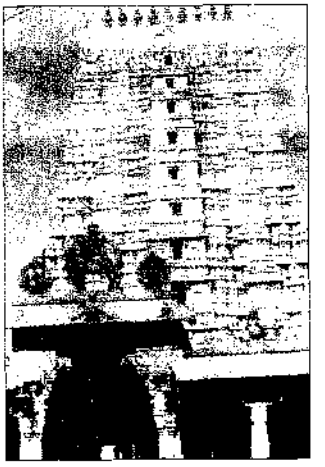

रामेश्वरमः तमिलनाडु के रामनाथपुरम जिले में स्थित रामेश्वरम भारत के चार पवित्र धामों में से एक है। यहाँ के ज्योतिर्लिंग को स्वयं भगवान् राम ने स्थापित किया था।

सीता-हरण के बाद राम सुग्रीव की सेना लेकर लंका पर चढ़ाई करने गए थे। लेकिन लंका तक पहुँचने के लिए समुद्र पार करना जरूरी था। तब राम ने सेना सहित रामेश्वरम में ही पड़ाव डाला था। उन्होंने समुद्र से लंका तक जाने के लिए रास्ता माँगा। मगर समुद्र ने रास्ता नहीं दिया।

इस पर राम को गुस्सा आ गया। उन्होंने समुद्र को सुखाने के लिए धनुष-बाण उठा लिया। यह देखकर समुद्र ब्राह्मण का वेश धारण करके राम के सामने आ गया। उसने राम को समझाया कि पानी को सुखाने से बेहतर है कि लंका तक एक पुल बना दिया जाना।

राम ने समुद्र की बात मान ली पुल का निर्माण किया और युद्ध में रावण को मारकर सीता के साथ राम फिर इसी स्थान पर आए। ऋषियों का कहना था कि राम के द्वारा भगवान् शंकर का एक ज्योतिर्लिंग स्थापित करने से ब्रह्महत्या का पाप समाप्त हो सकता है। राम ने ज्योतिर्लिंग लाने के लिए हनुमान को कैलास पर्वत पर भेजा।

हनुमान को लौटने में कुछ देर हो गई। तब तक ज्योतिर्लिंग की स्थापना का मुहूर्त और रावण को मारने के प्रायश्चित के रूप में यहाँ एक ज्योतिर्लिंग की स्थापना की, जो 'रामेश्वर' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।